रजब के कुंडो का हुकम

हजरत मुफ्ती तकी उस्मानी दब. हवाला- इस्लाही खुत्बात हिन्दी/१ से मजमुन के एक टुकडे का लिप्यान्तरण किया हे.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

शबे मेराज की तो कुछ हकीकत भी हे, के इस रात में नबी करीम अलयहिस्सलाम इतने आला मकाम पर तशरीफ ले गये थे, लेकिन इस से भी जियादा आज कल फर्ज़ और वाजिब के दर्जे में माशरे में जो चीझ फेल गयी हे, वो है कुंडे, अगर किसी ने कुंडे नही किये तो वो मुसलमान ही नही, नमाज पढे या ना पढे, रोजे रखे ना रखे, गुनाहो से बचे ना बचे, लेकिन कुंडे जरूर करे, अगर कोइ शखस ना करे या करने वालो को मना करे, तो उस पर लानत और मलामत की जाती हे, खुदा जाने ये कुंडे कहा से निकल आये? ना कुरआन व हदीस से साबित हे, ना सहाबा रदी से, ना ताबीइन से, ना तबे ताबीइन से और ना बुजरूगाने दीन से, कही से इसकी कोइ असल साबित नही. कुंडो को इतना जरूरी समझा जाता हे के घर में दुसरे काम हो या ना हो लेकिन कुंडे जरूर होने चाहिये, इसकी वजह ये है के इसमें मजा और लज्ज़त आती हे और हमारी कौम को लज्ज़त और मजे की आदत पड गयी हे, कोइ मेला होना चाहिये और कोइ नफस के मजे का सामान होना चाहिये, हलवा और पूरिया पकती हे, इधर से उधर और उधर से इधर आती जती हे, तो ये एक मजे का काम हे इसलिये शैतान ने इसमें मशगुल कर दिया.

ये उम्मत खुराफात में खो गयी

इस कीसम की चीझो को जरूरी समझ लिया गया और हकीकी चीझो पीठ के पीछे डाल दिया, इसके बारे में अपने भाइयो को समझाने की जरूरत हे, इसलिये बहुत से लोग ना-समझी की वजह से ये काम करते हे, उनके दिलो में कोइ दुश्मनी नही होती, लेकिन दीन को नही जानते, उन बेचारो को इसके बारे में पता नही हे, वो समझते हे के जिस तरह इदुल अझहा के मोके पर कुरबानी होती हे और गोश्त इधर से उधर और उधर से इधर आता जता हे, ये भी कुरबानी की तरह कोइ जरूरी चीझ होगी और कुरआन व हदीस में कोइ सबुत होगा, इसलिये ऐसे लोगो को प्यार मोहब्बत और शफकत से समझाया जाये और ऐसी मेहफिलो में शरीक होने से बचा जाये.